भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। सूत्रकाल तथा लोकायत के बीच शिक्षा की सार्वजनिक प्रणाली के पश्चात् हम बौद्धकालीन शिक्षा को निरंतर भौतिक तथा सामाजिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होते देखते हैं। बौद्धकाल में स्त्रियों और शूद्रों को भी शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया गया।

प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट थी लेकिन कालान्तर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ। विदेशियों ने यहां की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया, जिस अनुपात में होना चाहिये था। अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियां व समस्याएं हमारे सामने अलग-अलग रूप में मौजूद हैं।

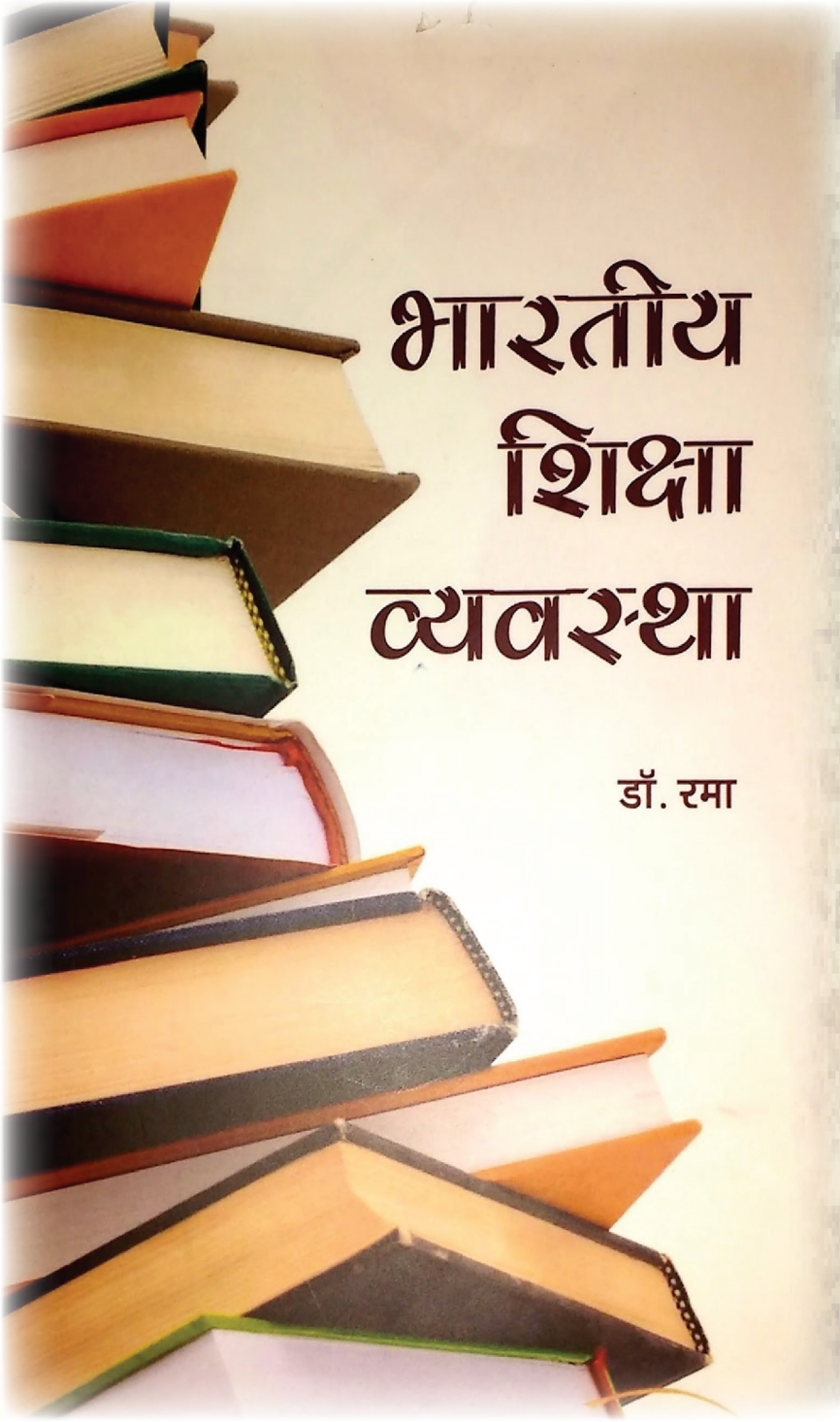


इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

**कलानिधि विभाग**

पुस्तक–लोकार्पण एवं पुस्तक–परिचर्चा
पर आपको सादर आमन्त्रित करता है।

## भारतीय शिक्षा–व्यवस्था

डॉ० रमा

| | |
|---|---|
| अध्यक्ष | : डॉ० पी. सी. जैन |
| मुख्य अतिथि | : श्री रामबहादुर राय |
| प्रस्तावना | : डॉ० सच्चिदानंद जोशी |
| स्वागत भाषण | : डॉ० आर. सी. गौड |
| मुख्य वक्ता | : प्रो० जे. एस. राजपूत |
| पुस्तक–परिचय | : डॉ० विजय कुमार मिश्र |
| लेखकीय वक्तव्य | : डॉ० रमा |
| विशेष वक्तव्य | : प्रो० अनिल कुमार राय |
| धन्यवाद प्रस्ताव | : रेनु बाली |
| मंच संचालन | : श्री मनीष |
| जलपान सायं | : 5:30 बजे |

दिनांकः 22 फरवरी 2018 समयः 4:00 बजे से

स्थानः आईजीएनसीए सम्मेलन कक्ष, सी.वी. मैस बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली